अमूल्य योगदान

वाटिका में आया मैं उंगली पकड़ कर
पंख मिले और संवरता गया बचपन
नित नए सुर और अनोखी ताल
हर खेल सुलझा गया जीवन के सवाल
रंगों से भरी राहें जगा गयीं उमंगें
ज्ञान के साथ संस्कारों का चोला
कहाँ से आया–किसने पहनाया

पाखी के तिनके–बागों की कलियाँ
अल्हढ़ सी ऋतुएं–दीपों की लड़ीयाँ
आनंद की लहरी से महकता आँगन
किसने सहेजा किसने बनाया
अनेकों सागर का निरंतर मंथन कर
किसने भर दी श्री की मंजूषा

मन के भाव एवं विचारों को, दिया एक रूप
जो हमको दर्शाता है, नित्य नया स्वरूप।
१८ जुलाई, १९८८ को हुई जब स्थापना
मन में कई संकल्प और थी एक कल्पना।।

शिक्षा रूपी बीज को रोपित कर, यथोचित मार्ग दर्शन दिया
उनके द्वारा मिले ज्ञान का, हमने भी अनुसरण किया।
प्रारम्भ में पाँच थे शामियाने, नन्हें कदमों के बने जो आशियाने
समय की गति लगी जब बढ़ने,
प्रेम और संवेदनाओं के बीच सभी लगे थे कहने
मानव मूल्यों की सभी कलियाँ लगी थीं खिलने।।

विद्यालय रूपी तरू को मिली एक स्नेह–स्पन्दित छाया
इसको पुष्पित, पल्लवति होते देख, सबका मन हर्षाया।
एक दिन, आया एक ऐसा झोंका, हमने बहुत था रोका
ले चला अपने साथ–एक जलता दीप, प्रज्ज्वलित ज्ञान
हमारे बीच की अद्भुत शक्ति और मधुर मुस्कान।।

यही तो है समय का प्रवाह जो छोड़ता चला जाता है अपना प्रभाव
हम, 'मानव समाज को–दिखाता और समझाता है,
समय है बहुत बलवान, यह बार बार बतलाता है।
दिखाई राहों पर चलकर स्वप्न साकार करेंगे,
नहीं इसमें कोई संदेह दिए संदेशों का वरण करेंगे।।
विद्यालय रूपी वृक्ष की बढ़ती रहेगी हरियाली,
बच्चों की गूँजती किलकारी से बढ़ेगी खुशहाली।
निखर पाए यहाँ हर एक व्यक्तित्व,
सबका ही हो अपना एक अस्तित्व
यहाँ होती रहे, सद्गुणों की सराहना,
दुआ हमारी है यही, प्रभु से है यही–प्रार्थना।।

ज्ञानदीप को निरंतर जलते रहना था,
बचपन को भी तो आगे बढ़ते रहना था
किशोरों की कल्पना का अनोखा एक संसार,
मौलसारी तले सजाकर दिया नया विस्तार।।

अब सीमित नहीं है देश तक अपनी यह उड़ान,
लगाकर IB के पंख, जीतने चल दिए जहान।
जितना आपने सिंचित किया जीवन मूल्यों को,
विस्तृत उतना ही होता गया ज्ञान का वितान।।
कण–कण में बसी है सुगंध मधुर स्मृतियों की,
सदा याद दिलाएगी जो, श्री के कर्तव्यों की।।

फला बीज वह, आपने फिर उसका बीच दूर पहुँचाया,
मिली स्नेह की धूप–छाँव तो 'अरावली' ने जीवन पाया।
इसने भी यश–मान दूर–दूर तक फैलाया,
दो बेटियों सा प्यार है पनपा, वंश वृक्ष कहलाया।।

जो ज्ञान का दीप था मन में, यहाँ भी वह जगमगाया,
आपके स्नेह और संवेदनाओं को हम सब को अपनाया।
स्वप्न–स्वरूप जो था कभी यथार्थ बनकर वह आया,
जीवन–मूल्यों की सौगात पाकर 'श्री' का परिवार कृतज्ञ कहलाया।

श्रीराम सा आदर्श बनाकर, अपने संस्कारों से दीप जलाकर,
अज्ञान धरती से दूर भगाकर,
अनूठी कीर्ति का उज्जवल प्रकाश फैलाया।
धरा से नभ तक की ज्ञान–राशि को जन–जन तक पहुँचाकर समृद्ध बनाया।

विवेक विचार और सूझ–बूझ से, ज्ञान मंथन करवाया है,
दुर्विचार और दुर्गुणें का, विष–विग्रह कर डाला है।
गुरू–शिष्य परंपरा का वास्तविक मूल सबको समझाया है,
सबके ज्ञान चक्षु खोल, सबको नया मार्ग दिखलाया है।

बड़े मन से अरावली में ज्ञान का दीपक जलाया था आपने,
इसे आँधियों से बचाया था आपने।
थाती नई थी, बाती नई थी,
जिसे स्नेह दे, जगमगाया था आपने।
रौशन हुआ अरावली का आशियाना।
दीए की शिखा को सजाया था आपने।
विद्यालय के सुकुमारों को,
अभिवादन करना सिखाया आपने।

स्वप्न था वह गंभीर, शब्द था श्री राम,
संघर्ष जारी रखा, न किया विश्राम।

नन्हा कदम और आगे बढ़ाया,
एक पुलिस पब्लिक स्कूल भी बनाया।
मानव मूल्यों को ध्यान रखकर रखी थी ये नींव,
संस्कृति में गर्व करते रहें और बनें निष्ठावान,
इन्हीं पथ पर चलकर हम, देते हैं उन्हें सम्मान।।

~ श्री परिवार